कैम्पस कनेक्ट

(सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु का समाचार बुलेटिन)

मार्च, 2026 वर्ष : 1, अंक : 8

प्रेरणा–स्रोत :

श्रीमती आनन्दीबेन पटेल
माननीया कुलाधिपति एवं
श्री राज्यपाल, उ. प्र.

श्रीमान योगी आदित्यनाथ
माननीय मुख्यमन्त्री, उ. प्र.

संरक्षक :
प्रो. कविता शाह
कुलपति, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय

परामर्श–मण्डल :
प्रो. दीपक बाबू
प्रो. सौरभ
प्रो. प्रकृति राय
प्रो. नीता यादव
डॉ. अश्विनी कुमार (कुलसचिव)
श्री दीनानाथ यादव (परीक्षा नियंत्रक)

सम्पादक :
प्रो. हरीशकुमार शर्मा

सह–सम्पादक :
डॉ. अविनाश प्रताप सिंह

सम्पादक–मण्डल :
डॉ. शिवम शुक्ल
डॉ. रेनू त्रिपाठी
डॉ. सत्यम मिश्र

वित्त–प्रबन्धन
श्री रमेन्द्र कुमार मौर्य (वित्ताधिकारी)

तकनीकी सहयोग एव डिजाइनिंग :
श्री दिव्यांशु कुमार

स्वत्वाधिकारी एवं प्रकाशक :
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु,
सिद्धार्थनगर, उत्तर प्रदेश–272202
ईमेल :
campus.connect@suksn.edu.in
वेबसाइट : www.suksn.edu.in

(सम्पादन–प्रकाशन पूर्णतः अवैतनिक एवं अव्यावसायिक)

नोट : रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की उनसे सहमति होना अनिवार्य नहीं है।

कुलपति–कथन

मार्च महीना हमारी अपनी कालगणना के अनुसार अनुसार फाल्गुन–चैत्र का महीना है। वसन्त इन दिनों अपने पूरे उरूज पर है। पर, इसका एक बड़ा महत्त्व है होली के कारण। होली रंगोत्सव है, आनन्दोत्सव है, लोकोत्सव है। जीवन विविधरंगी है, संसार बहुरंगों से सजा हुआ है और हमारा अन्तस भी अनेक रंग–रागों से सज्जित है। इन्हीं बहुरंगों तथा उनके प्रति हमारे लगाव एवं स्वीकार की अभिव्यक्ति होली है।

आनन्द के साथ ही होली हमारे लिये बड़ी शिक्षा लेकर भी आती है। वास्तव में तो हमारा हर त्योहार हमें कुछ–न–कुछ शिक्षा देने के लिये भी है। होली का भी अपना सन्देश है। होली की कथा सभी को ज्ञात है कि शक्ति के मद में चूर हिरण्यकश्यप ने अपने ही भगवद्भक्त बेटे प्रह्लाद को ठिकाने लगाने के लिये अपनी बहन होलिका का सहयोग लिया, जिसके पास यह शक्ति थी कि आग उसे नहीं जला पाती। वह अपने भतीजे प्रह्लाद को गोद में लेकर चिता में बैठी, पर भगवत्कृपा से प्रह्लाद बच गये; उल्टे होली ही जलकर स्वाहा हो गयी। उसी स्मृति में हम आज भी होलिका–दहन करते हैं और भक्त प्रह्लाद की जय बोलते हैं।

इस प्रकार होली हमें अति आत्मविश्वास तथा शक्तियों के दुरुपयोग से बचने की सीख देती है। यह हममें आत्मबल के साथ यह विश्वास भी भरती है कि दुष्ट शक्तियाँ चाहे कितनी भी प्रबल हों और सत्य तथा न्याय को वे भले कुछ समय के लिये दबा लें, पर अन्ततः वे परास्त होती ही हैं। हिरण्यकश्यप अहंकार का प्रतीक है– शक्ति के मद में सत्य को भूलने वाला, अपनी महत्त्वाकांक्षा के लिये अपनों की, यहाँ तक कि अपनी सन्तान तक की बलि चढ़ाने वाला। उसकी बहन होलिका अति आत्मविश्वास से भरी अशुभ भावना का प्रतीक है। उसके पास विशिष्ट शक्ति थी, पर उसका उद्देश्य शुभ नहीं था। इस कारण उसने किसी दूसरे के हित के बजाय अहित का कार्य चुना और स्वयं नष्ट हो गयी। होली यह सीख देती है कि किसी विशिष्ट शक्ति या क्षमता का उपयोग मानवता के हित में हो न कि किसी का अहित करने के लिये। प्रह्लाद त्याग, तप, आस्था, सत्यनिष्ठा, अडिगता के प्रतीक हैं जो यह सिखाते हैं कि सन्मार्ग ही हमारा अभीष्ट होना चाहिए।

मनुष्य के भीतर हिरण्यकश्यप भी है, होली भी, प्रह्लाद भी। वह जिसको जितना जगाता है, वैसा ही परिणाम उसे प्राप्त होता है। यह मनुष्य को तय करना है कि वह किसे अपने भीतर जगाये और कैसा परिणाम पायें? होली पर बाह्य रंगों के साथ ही यदि हम अन्तस को भी आस्थामय शुभ भावों के रंगों से रँग पायें तो जीवन निश्चित ही आनन्द–मंगलमय होगा, इसमें सन्देह नहीं।

इसी महीने नवरात्र भी हैं, जो हमारे अपने नववर्ष विक्रम संवत् 2083 के आगमन के साथ ही आरम्भ हो रहे हैं। नवरात्र की पूर्णता के साथ श्रीरामनवमी भी इसी माह में आ रही है। मार्च में ही ईद और महावीर जयन्ती भी है। सभी को इन तथा अन्य सभी शुभावसरों की हार्दिक बधाई और बहुत शुभकामनाएं। नवसंवत् आप सबको मनोवांछित फल प्रदान करने वाला सिद्ध हो।

–कविता शाह

विश्वविद्यालय कुलगीत

आत्मदीप प्रकाश पावन, परम विद्या धाम।
विश्वविद्यालय यही, सिद्धार्थ जिसका नाम।
बुद्ध की करुणा, अहिंसा, प्रेम का उपहार,
उमड़ता रहता अहर्निश शान्ति–पारावार,
ज्ञान का आलोक, मानव का परम सन्देश,
नित्य प्रज्ञा–प्रीति, गुरुओं का नवल निवेश।
आत्मदीप प्रकाश पावन...

परम पावन, परम निर्मल, पुण्य भूमि प्रकाश,
ज्ञान का, आनन्द का, आलोक का आकाश,
महा करुणा से अलंकृत कपिलवस्तु महान,
अमरता की चिर तृषा का लोक मंगल गान।
आत्मदीप प्रकाश पावन...

नमन इसको इस धरा को कोटि कोटि प्रणाम,
यह नहीं बस एक संस्था, तीर्थ अमृत धाम,
महाप्रज्ञा, महाकरुणा, शान्ति का सन्देश,
विश्वगुरु का यह तपोमय, ज्ञान का परिवेश।

आत्मदीप प्रकाश पावन, परम विद्या धाम।
विश्वविद्यालय यही, सिद्धार्थ जिसका नाम।

(गीत–रचना : अनन्त मिश्र)

सबको शुभमय हो होली यह रंग–बिरंगी

रंग–बिरंगी आ गई, होली फिर ले प्रीत।
रँगो प्रीत के रंग में, मधुमय गाकर गीत।।
मधुमय गाकर गीत, जो बीती ताहि बिसारो।
अभिनव ले संकल्प, नया कुछ सोच विचारो।
आप, आपके परिजन–पुरजन, साथी–संगी।
सबको शुभमय हो, होली यह रंग–बिरंगी।।

नव विक्रम संवत

नवल हो, नवल हो, नवल हो–
नव विक्रम संवत् की सुकीर्ति धवल हो!

विफल हो, विफल हो, विफल हो–
कुचक्रियों, कुमार्गियों, कुव्याधियों का
कुफल हो!

प्रबल हो, प्रबल हो, प्रबल हो–
देश में ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा का भाव
प्रबल हो!

सफल हो, सफल हो, सफल हो–
भारतीयों की मेधा, श्रम–साधना
सफल हो।

सबल हो, सबल हो, सबल हो–
देशवासियों का नित–नूतन प्रखर
आत्मबल हो!

–हरीशकुमार शर्मा 'पराया'

कार्यपरिषद के अनुमोदन से सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के शिक्षको की हुई प्रोन्नति

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर की कार्य परिषद की बैठक में विश्वविद्यालय के शैक्षणिक, शोध एवं संस्थागत विकास से जुड़े अनेक महत्वपूर्ण प्रस्तावों पर विस्तार से चर्चा करते हुए अनुमोदन प्रदान किया गया। बैठक में विश्वविद्यालय में कार्यरत 19 सहायक आचार्यों को लेवल–10 से लेवल–11 में प्रोन्नति तथा 3 एसोसिएट प्रोफेसरों को प्रोफेसर पद पर पदोन्नति प्रदान किए जाने का अनुमोदन कार्य परिषद द्वारा किया गया।

इस अवसर पर कुलपति प्रो. कविता शाह, कुलसचिव डॉ. अश्वनी कुमार, परीक्षा नियंत्रक दीनानाथ यादव, वित्त अधिकारी रामेंद्र मौर्य, संकायाध्यक्ष कला प्रो. नीता यादव, संकायाध्यक्ष विज्ञान प्रो. प्रकृति राय, कुलानुशासक प्रो. दीपक बाबू सहित कार्य परिषद के सदस्यगण– पूर्व न्यायधीश न्यायमूर्ति श्री अनिरुद्ध सिंह, प्रो. अरविंद कुमार सिंह, प्रो. बृजेश त्रिपाठी, प्रो. एस.पी. सिंह एवं अन्य सदस्यों ने सभी प्रोन्नत आचार्यगण को बधाई एवं शुभकामनाएँ दीं।

इस अवसर पर कुलपति प्रो. कविता शाह ने कहा कि विश्वविद्यालय परिसर में कार्यरत सभी शिक्षक पूरी लगन, निष्ठा और टीम भावना के साथ कार्य कर रहे हैं। उन्होंने आशा व्यक्त की कि यह ऊर्जावान अकादमिक टीम विश्वविद्यालय को शोध एवं नवाचार के क्षेत्र में नई ऊँचाइयों तक ले जाएगी तथा शिक्षक निरंतर रचनात्मक और नवोन्मेषी कार्य करते रहेंगे।

विदित हो कि विगत दिनों असिस्टेंट प्रोफेसर के लेवल–10 से लेवल–11 एवं 3 एसोसिएट प्रोफेसर के प्रोफेसर पद पर प्रोन्नति हेतु स्क्रीनिंग एवं चयन समिति ने साक्षात्कार के उपरांत अपनी संस्तुति बंद लिफाफे में प्रस्तुत की थी, जिसे कार्य परिषद की बैठक में अनुमोदन हेतु खोला गया ।

कार्य परिषद की बैठक में ही पाठ्यक्रमों एवं अध्ययन–अध्यापन में A I (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) एवं आधुनिक तकनीकों की सकारात्मक भूमिका पर भी विशेष चर्चा की गई। कार्य परिषद में यह प्रस्ताव रखा गया कि कृत्रिम मेधा (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) के माध्यम से अध्ययन एवं शोध को अधिक प्रभावी बनाने हेतु कार्यशालाओं एवं प्रशिक्षकों के माध्यम से शिक्षकों को तकनीकी रूप से प्रशिक्षित किया जाए, जिससे शैक्षणिक प्रविधियों के माध्यम से विषय–वस्तु को अधिक सुगम, रोचक एवं अधिगमपरक बनाया जा सके।

इसके साथ ही कार्य परिषद ने विश्वविद्यालय परिसर में सस्टेनेबिलिटी ऑफिस की स्थापना के प्रस्ताव को भी अनुमोदन प्रदान किया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. कविता शाह ने कहा कि सस्टेनेबिलिटी ऑफिस सतत विकास की अवधारणा को केंद्र में रखते हुए शोध, नवाचार, पाठ्यक्रम विकास, रोजगारोन्मुख कार्यक्रम एवं शिक्षांतर गतिविधियों को एक समन्वित और सुदृढ़ दिशा प्रदान करेगा, जिससे विश्वविद्यालय की अकादमिक एवं सामाजिक उपलब्धियों में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।

उत्तर प्रदेश राजभवन के निर्देशों के क्रम में विश्वविद्यालय में डाटा बैंक/डाटा सेंटर की स्थापना के प्रस्ताव को भी कार्य परिषद ने अनुमोदन प्रदान किया। इसके अतिरिक्त भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र की स्थापना संबंधी आईसीसी की संस्तुति को भी कार्य परिषद द्वारा स्वीकृति दी गई।

बैठक में जलवायु परिवर्तन (Climate Change) जैसे महत्वपूर्ण विषय पर अध्ययन एवं शोध को बढ़ावा देने के उद्देश्य से इस क्षेत्र में हिमालयन सेंटर (Himalayan Centre) की स्थापना के प्रस्ताव पर भी चर्चा की गई, जिसे क्षेत्रीय एवं वैश्विक शोध की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी बताया गया।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में विज्ञान दिवस आयोजित

27 फरवरी को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के विज्ञान संकाय द्वारा कुलपति प्रो कविता शाह की अध्यक्षता में गौतम बुद्ध सभागार में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस वर्ष कार्यक्रम की मुख्य थीम "सतत भविष्य के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी' : विज्ञान में महिलाएँ" रहीं, जबकि उप–थीम "सिद्धार्थ नगर में जलवायु परिवर्तन एवं स्थिरता : चुनौतियाँ एवं समाधान" थी।

कुलपति महोदय ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कहा कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी आज वैश्विक स्तर पर सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति का सशक्त माध्यम बन चुके हैं। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छ ऊर्जा, जल संसाधन प्रबंधन, स्वास्थ्य, कृषि एवं जलवायु परिवर्तन जैसी समकालीन चुनौतियों के समाधान में वैज्ञानिक अनुसंधान की निर्णायक भूमिका को रेखांकित किया। माननीय कुलपति ने विशेष रूप से विज्ञान के क्षेत्र में महिला वैज्ञानिकों के बढ़ते योगदान की सराहना करते हुए कहा कि महिलाएँ नवाचार, अनुसंधान एवं

सामाजिक विकास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन ला रही हैं। उन्होंने युवतियों को विज्ञान एवं अनुसंधान को करियर के रूप में अपनाने हेतु प्रेरित किया तथा कहा कि महिला सशक्तिकरण के बिना सतत विकास की परिकल्पना अधूरी है।

द्वितीय सत्र में अध्यक्ष, छात्र कल्याण प्रो. नीता यादव ने 'कपिलवस्तु के पुरातत्व, इतिहास एवं संभावनाएँ', वनस्पति विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. आशुतोष कुमार वर्मा ने 'सिद्धार्थ नगर की प्रमुख आर्द्रभूमियों का आकलन' के माध्यम से रामसर साइट की विस्तृत रुपरेखा तथा डॉ. लक्ष्मण सिंह ने 'ऊर्जा का भविष्य' विषय पर व्याख्यान दिए। इस अवसर पर सामाजिक एवं पर्यावरणीय क्षेत्र में सक्रिय एनजीओ अंकुर की को–फाउंडर डॉ. वीणा अग्रवाल भी अपनी टीम के साथ उपस्थित रहीं। उन्होंने एनजीओ अंकुर का परिचय भी प्रस्तुत किया गया। राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर विज्ञान संकाय की महिला शिक्षिकाओं को मोमेंटो देकर सम्मानित भी किया गया।

इसके पूर्व प्रथम सत्र में श्रीमती वीना तिवारी, सहायक वनाधिकारी, सिद्धार्थ नगर ने "सतत जीवनशैली : सतत विकास में हमारा योगदान" विषय पर व्याख्यान दिया। इसके पश्चात डॉ. मनीषा बाजपेयी, भौतिकी विभाग ने "सतत विकास के लिए ग्रीन नैनोप्रौद्योगिकी : अवसर एवं चुनौतियाँ" विषय पर विचार साझा किए। कार्यक्रम का संयोजन प्रो. कौशलेन्द्र चतुर्वेदी एवं डॉ आशुतोष श्रीवास्तव ने किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ रक्षा ने किया एवं धन्यवाद–ज्ञापन प्रो. एस. के. श्रीवास्तव ने किया।

इस अवसर पर क्विज प्रतियोगिता तथा जैव विविधता, स्थिरता और विज्ञान पर आधारित क्विज, प्रदर्शनी एवं पोस्टर प्रस्तुति भी आयोजित की गई। ऑनलाइन क्विज प्रतियोगिता में कुल 133 विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान नशीद अहमद ने, द्वितीय स्थान सूरज कुमार चौधरी ने तथा तृतीय स्थान श्रेया अग्रवाल ने प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त प्रदर्शनी एवं पोस्टर प्रस्तुति प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने पर्यावरण, जैव–विविधता एवं स्थिरता से संबंधित विषयों पर आकर्षक एवं वैज्ञानिक पोस्टर प्रस्तुत किए। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान दीपिका यादव, द्वितीय स्थान रंजना यादव एवं तृतीय स्थान मनमोहन कुमार गुप्ता ने प्राप्त किया।

इस अवसर पर डॉ. कपिल गुप्ता एवं डॉ. किरण गुप्ता सम्पादित एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर की शोधपरक पुस्तक 'पर्यावरण में जेनोबायोटिक्स– प्रभाव, पहचान एवं उनका निवारण' का विमोचन सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की माननीय कुलपति प्रो. कविता शाह जी के कर–कमलों द्वारा किया गया। पुस्तक में पर्यावरण में उपस्थित जेनोबायोटिक पदार्थों, उनके मानव स्वास्थ्य एवं जैव–विविधता पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों, उनकी पहचान हेतु आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकों तथा प्रभावी निवारण (रिमेडिएशन) विधियों पर गहन एवं वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में 'भारतीय भाषा परिवार' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर में दिनांक 7 फरवरी 2026 को 'भारतीय भाषा परिवार' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। यह संगोष्ठी भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अधीन कार्यरत भारतीय भाषा समिति तथा सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में संपन्न हुई।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व आचार्य प्रो. रमेश चंद शर्मा ने कहा कि उपनिवेश काल में भारतीय भाषाओं को योजनाबद्ध ढंग से हीन दिखाने का प्रयास किया गया। भारतीय भाषाएं भारतीय ज्ञान–परंपरा की वाहक हैं, किंतु औपनिवेशिक एवं पश्च–औपनिवेशिक लेखन में इन्हें कमतर सिद्ध करने का प्रयास हुआ। उन्होंने कहा कि दर्शन, न्याय और व्याकरण– भाषा अध्ययन की ये तीनों परंपराएं भारत में ही विकसित हुई हैं। बहुभाषिकता और भाषिक विविधता भारतीय सभ्यता की विशिष्ट पहचान है। भारत जैसी भाषिक व्यवस्था विश्व के अन्य देशों में दुर्लभ है। भाषा की निरन्तरता हमारे ही देश में मिलती है। उन्होंने भारतीय भाषाओं की पाँच परंपराओं का उल्लेख करते हुए भाषा को अर्थव्यवस्था का भी सशक्त आधार बताया।

उद्घाटन समारोह में दूसरे वक्ता के रूप में प्रोफेसर निरंजन सहाय ने कहा कि भाषा के प्रति भारतीय दृष्टिकोण व्यापक और समावेशी रहा है, जबकि पश्चिम का दृष्टिकोण अपेक्षाकृत संकुचित रहा है। पश्चिमी शक्तियों ने अपने आधिपत्य के लिए हमें बाँटने का प्रयास किया और यह विभाजन भाषा के क्षेत्र में भी वर्गीकरण के माध्यम से किया गया। आज आवश्यकता है कि हम अपनी बौद्धिक परंपराओं और स्मृतियों से जुड़ी समझ का विकास करें। उन्होंने कहा कि विभिन्न भाषाओं की विविधता के बावजूद भारतीय भाषाएं समानांतर रूप से विकसित हुई हैं तथा कारक, क्रिया और संरचना के स्तर पर उनमें गहरी समानता है।

अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रोफेसर नीता यादव ने कहा कि 'भारतीय भाषा परिवार' विषय पर प्रकाशित दोनों पुस्तकें भारत को जोड़ने का महत्वपूर्ण उपक्रम हैं। अंग्रेजों ने भाषा सहित अनेक माध्यमों से हमें विभाजित करने का प्रयास किया, किंतु आज आत्मचिंतन करते हुए हमें पुनः अपनी परंपरागत विचार–श्रेणियों की ओर लौटने की आवश्यकता है।

प्रथम तकनीकी सत्र में पहले वक्ता के रूप में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से आये डॉ. सत्यप्रकाश पाल ने कहा कि भारतीय भाषाएं केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि जोड़ने की संस्कृति सिखाती हैं। भाषा हमारी पहचान और सभ्यता है, इसलिए स्थानीय भाषाओं के संरक्षण पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि संयुक्त परिवारों का विघटन सामाजिक अलगाव का प्रथम लक्षण है और भाषा उस सभ्यता की निरंतरता का आधार है।

बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ से पधारे डॉ. बलजीत कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि 'भारतीय भाषा परिवार' पर आधारित पुस्तकें पहले हिंदी में आनी चाहिए। उन्होंने कहा कि हिंदी समावेशी स्वभाव की भाषा है और इसलिए सजीव है। मातृभूमि, माता और मातृभाषा का विशेष महत्व है। उन्होंने इन पुस्तकों को भारतीय सभ्यता की आत्मकथा बताते हुए कहा कि यह पारंपरिक दृष्टिकोण को नई चुनौती देती हैं और हमारी चेतना को जागृत करने का कार्य करती हैं।

इस सत्र की अध्यक्षता करते हुए इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज से पधारे प्रो. अमरेंद्र त्रिपाठी ने कहा कि भाषा के आधार पर उत्पन्न विवादों को मिटाने का प्रयास इन पुस्तकों में किया गया है। 1857 के स्वाधीनता संग्राम का संदर्भ देते हुए उन्होंने कहा कि उस समय भारत की धार्मिक और भाषाई एकता स्पष्ट दिखाई देती है। औपनिवेशिक सत्ता ने भाषा और धर्म दोनों आधारों पर विभाजन कर

गहरी खाई उत्पन्न की, जिसका परिणाम आगे चलकर देश–विभाजन के रूप में सामने आया। उन्होंने कहा कि भाषा केवल विचार–विनिमय का माध्यम नहीं, बल्कि मनुष्य के अस्तित्व से जुड़ी है। 'भारतीय भाषा परिवार' का विचार औपनिवेशिक विचारधारा को उसी की भाषा में तार्किक और वैज्ञानिक ढंग से चुनौती देने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

संगोष्ठी के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के आचार्य प्रो. विमलेश कुमार मिश्र ने कहा कि 'भारतीय भाषा परिवार' भारत की समावेशी संस्कृति को उजागर करने वाली पुस्तकों की श्रृंखला है, जिसके सतत विस्तार के क्रम में राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन हो रहा है। यह पुस्तकें मैकाले और मैक्समूलर जैसे विचारकों द्वारा स्थापित औपनिवेशिक भाषा दृष्टि का उन्हीं की भाषा में उत्तर प्रस्तुत करती हैं।

विशिष्ट अतिथि के रूप में मंच पर उपस्थित दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के आचार्य प्रो. प्रत्यूष दुबे ने कहा कि 'भारतीय भाषा परिवार' का विचार भारत की सांस्कृतिक एकता की संकल्पना को प्रस्तुत करता है तथा लोक और भाषा के गहरे जुड़ाव को रेखांकित करता है। भारतीय भाषाएं एक–दूसरे को नष्ट नहीं करतीं, बल्कि एक–दूसरे को शक्ति प्रदान करती हैं, जोड़ती हैं और निरंतर समृद्ध करती हैं। इस अवसर पर लाल बहादुर शास्त्री पी. जी. कॉलेज के प्राचार्य डॉ. राम पांडेय ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

इस एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कला संकाय अधिष्ठाता प्रोफेसर नीता यादव ने की तथा समापन सत्र की अध्यक्षता हिंदी विभाग के आचार्य प्रोफेसर सत्येंद्र कुमार दुबे ने की। संगोष्ठी की आख्या प्रस्तुति डॉ. रेनू त्रिपाठी ने की एवं धन्यवाद–ज्ञापन संगोष्ठी के संयोजक प्रोफेसर हरीशकुमार शर्मा ने किया। उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ. जय सिंह यादव तथा समापन सत्र का संचालन डॉ. हृदयकांत पांडेय ने किया। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में सर्वप्रथम भारतीय भाषा समिति द्वारा प्रकाशित दो पुस्तकों **'भारतीय भाषा परिवार : भाषाविज्ञान में एक नया ढाँचा** तथा **'भारतीय भाषा परिवार : परिप्रेक्ष्य और क्षितिज** (Bharatiya Bhasha Parivar : A New Framework in Linguistics तथा 'Collected Studies on Bharatiya Bhasha Parivar : Perspectives and Horizons) का पुनर्विमोचन मंचस्थ अतिथियो द्वारा किया गया। इस अवसर पर मंच पर सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. अश्विनी कुमार तथा परीक्षा नियन्त्रक श्री दीनानाथ यादव भी उपिस्थित रहे।

कार्यक्रम में प्रो. दीपक बाबू, प्रो. सौरभ, प्रो. सुनीता त्रिपाठी, डॉ. सच्चिदानंद चौबे, डॉ. अखिलेश दीक्षित, डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव, डॉ. विशाल गुप्ता, डॉ. प्रज्ञेशनाथ त्रिपाठी, डॉ. संतोष सिंह, डॉ. अविनाश प्रताप सिंह, डॉ. रविकांत शुक्ला, डॉ. सरिता सिंह, डॉ. यशवन्त यादव, डॉ आभा द्विवेदी, डॉ. धर्मेन्द्र कुमार, डॉ. मयंक कुशवाहा, डॉ. प्रदीप पाण्डेय, डॉ. शिवम शुक्ला, डॉ. वन्दना गुप्ता, डॉ. अरविन्द रावत, डॉ. डॉ. हरेंद्र शर्मा, डॉ. अमित साहनी, डॉ. अब्दुल हफीज, डॉ. बाल गंगाधर, डॉ. सत्यम मिश्र, डॉ. शिवेन्द्र सिंह, डॉ. राघवेन्द्र, डॉ. अमरनाथ सहित बड़ी संख्या में शिक्षक, शोधार्थी, विद्यार्थी एवं प्रतिभागी उपस्थित रहे।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के वाणिज्य संकाय द्वारा केंद्रीय बजट 2026 पर विशेष सत्र का आयोजन

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के वाणिज्य संकाय द्वारा 'केंद्रीय बजट 2026 : अवसर एवं चुनौतियाँ' विषय पर विचार–विमर्श हेतु एक विशेष सत्र का आयोजन किया गया। इस सत्र का उद्देश्य छात्रों एवं शिक्षकों को बजट की प्रमुख घोषणाओं, प्राथमिकताओं तथा भारतीय अर्थव्यवस्था पर इसके प्रभावों की गहन जानकारी प्रदान करना था।

इस सत्र में राजकोषीय नीति, कर सुधार, सरकारी व्यय, तथा इनके व्यापार, उद्योग और आर्थिक विकास पर पड़ने वाले प्रभावों पर विस्तार से चर्चा की गई। संकाय सदस्यों ने बजट 2026 में अवसंरचना, शिक्षा, रोजगार सृजन, एमएसएमई, डिजिटल अर्थव्यवस्था एवं सतत विकास से संबंधित प्रावधानों पर प्रकाश डाला।

यह कार्यक्रम सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. कविता शाह की प्रेरणा से तथा प्रो. सौरभ, अधिष्ठाता, वाणिज्य संकाय के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। प्रो. सौरभ ने अपने संबोधन में बजट के आलोक में विश्वविद्यालय द्वारा किए जा रहे शैक्षणिक एवं विकासात्मक प्रयासों पर प्रकाश डालते हुए छात्रों को देश की आर्थिक प्रगति में सहभागी बनने के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता वाणिज्य विभाग के अध्यक्ष प्रो. दीपक बाबू ने की। उन्होंने वाणिज्य के विद्यार्थियों के लिए बजट विश्लेषण के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि छात्रों को कर व्यवस्था, सार्वजनिक वित्त एवं आर्थिक नियोजन की व्यावहारिक समझ विकसित करनी चाहिए तथा उद्यमशील बनने का प्रयास करना चाहिए।

अर्थशास्त्र विभाग के प्रभारी डॉ. संतोष सिंह ने केंद्रीय बजट–2026 की प्रमुख विशेषताओं पर चर्चा करते हुए अवसंरचना विकास, शिक्षा, रोजगार सृजन एवं एमएसएमई को दिए गए प्रोत्साहन के सम्बन्ध में विस्तार से जानकारी दी। इसके अतिरिक्त डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव, विभागाध्यक्ष, प्राणीशास्त्र विभाग; डॉ. अखिलेश दीक्षित, विभागाध्यक्ष, बीबीए विभाग तथा डॉ. प्रदीप पाण्डेय, सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग ने बजट के उद्योग, स्टार्ट–अप्स एवं डिजिटल अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण प्रस्तुत किया।

सत्र के दौरान छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा कर सुधार, राजकोषीय अनुशासन एवं बजट से उत्पन्न नए अवसरों पर प्रश्न पूछे। श्री दीपक वर्मा (एमबीए तृतीय सेमेस्टर) एवं श्री चन्द्र किशोर मिश्रा (एमबीए प्रथम सेमेस्टर) ने केंद्रीय बजट–2026 का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया। यह सत्र सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक आर्थिक नीति के बीच सेतु स्थापित करने में सफल रहा।

कार्यक्रम का समन्वय डॉ. शिवम शुक्ला, वाणिज्य विभाग द्वारा किया गया, जिन्होंने कार्यक्रम के सुचारु संचालन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस अवसर पर डॉ. मनीष शर्मा, डॉ. नीरज सिंह, डॉ. दिनेश प्रसाद सहित अन्य संकाय सदस्य एवं बड़ी संख्या में छात्र उपस्थित रहे।

वाणिज्य संकाय ने भविष्य में भी इस प्रकार के शैक्षणिक कार्यक्रम आयोजित करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की, जिससे छात्र समसामयिक आर्थिक एवं वित्तीय विषयों से निरंतर अपडेट रह सकें। कार्यक्रम का समापन सभी वक्ताओं, संकाय सदस्यों एवं प्रतिभागियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

सम्पादकीय

एक प्रसिद्ध जातक कथा है– नामसिद्धि जातक। इस कथा में भगवान बुद्ध एक ऐसे शिष्य की कथा सुनाते हैं, जिसका नाम पापक था। वह अपने नाम से असन्तुष्ट रहता था। यह ज्ञात होने पर गुरू ने उसे एक दिन अपने पास बुलाया, उसकी समस्या पूछी और निदान के लिये उसे कुछ पाथेय की व्यवस्था कराकर नगर भेजा, जिससे कि वह वहाँ घूम–फिरकर अपने अनुकूल सही नाम चुन सके और गुरूजी उसका वही नामकरण कर सकें। वहाँ दिन भर भटकने पर उसे तरह–तरह के अनुभव हुए। उसे एक ऐसी महिला मिली जिसका नाम धनपाली था, पर कर्ज लिये धन को न चुका पाने के कारण उसकी पिटायी हो रही थी। एक राह भटका हुआ व्यक्ति मिला, जिसका नाम ही पन्थक था। एक जीवक नाम के व्यक्ति की शवयात्रा निकलती हुई उसे मिली। इस सबसे उसका ऐसा नाम के प्रति उत्साह भंग हुआ कि उसने आकर गुरुदेव से कहा कि उसका जो नाम है, वही रहने दिया जाये क्योंकि नाम से कुछ होता नहीं है। उसने बताया कि उसने धनपाली की धन के अभाव में दुर्गति होती देखी, पन्थक को रास्ता भटका हुआ पाया और जीवक को मरा हुआ देखा। इसलिये वह समझ गया कि अच्छा नाम रखने से कुछ नहीं होता है जो होता है, वह काम से और उसके परिणाम से होता है। गुरु ने उसे उसके अनुभवों द्वारा ही यह सिखा दिया कि जीवन में नाम नहीं, काम महत्त्वपूर्ण है।

अपने–अपने स्तर पर नाम प्रायः हर व्यक्ति चाहता है, यह एक सामान्य मानवीय प्रवृत्ति है। पर सभी का नाम होता नहीं। कारण कि काम नाम के योग्य नहीं हो पाता। इस धरती पर बहुत कुछ है, पर सभी को सभी कुछ नहीं मिल पाता। मिल भी नहीं सकता। बाबा तुलसीदास कहते हैं– 'सकल पदारथ हैं जग माहीं। करमहीन नर पावत नाहीं।' है तो सब कुछ संसार में, पर हमें मिलता वही है जो हमारी कर्मण्यता हमें दिलवा पाती है। एक कहावत है– 'छलनी में दुहो और कर्म को टटोलो।' अगर छलनी में दूध दुहा जायेगा तो अन्त में हाथ क्या आयेगा और कुछ नहीं प्राप्त होने पर भाग्य (कर्म) को दोष दिया जाये तो इसका क्या ही उपाय है! अपेक्षानुरूप परिणाम अपेक्षित कर्म से ही प्राप्त हो सकता है। भाग्य भी कर्मव्रतियों का ही साथ देता है।

हम सब संसार–सागर में रत्न ही ढूँढ़ने के लिये उतरते हैं, पर अन्त में मिल वही पाता है जिसमें हमारी रुचि पैदा हो जाती है या हमारी सामर्थ्य जो हमें दिलवा पाती है। हम कुछ पाने आते हैं और कुछ पाकर चले जाते हैं। अपनी सामर्थ्य का पूरा उपयोग न करने अथवा मार्ग से भटकने के कारण अपना उद्दिष्ट प्राप्त करने से चूक जाते हैं। भक्तिकालीन कवि मलिक मुहम्मद जायसी का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ है– 'पद्मावत'। उसमें पद्मावती जब अपनी सहेलियों के साथ मानसरोवर पर जाती है तो स्वयं तो नहीं, उसकी सहेलियाँ उसमें नहाने उतरती हैं। स्वयं इसलिये भी नहीं, क्योंकि जायसी ने उसे ब्रह्म का प्रतीक माना है। तो, नहाते समय एक सहेली का बहुमूल्य हार मानसरोवर में खो जाता है वह बेकरार होकर रोने लगती है। पद्मावती कहती है कि ऐसे क्यों रो रही हो, अगर हार खो गया है तो उसे ढूँढ़ लो। इस मानसरोवर में ही तो है। सारी सखियाँ हार ढूँढ़ने के लिये मानसरोवर में गोते लगाती हैं। हार तो किसी को नहीं मिलता, पर कुछ–न–कुछ हाथ में उनके अवश्य आ जाता है। जायसी लिखते हैं– 'कोई उठी मोती लेइ, घोंघा काहू हाथ।'

तो, हम सब इस संसार–रूपी सरोवर में हार प्राप्त करने के लिये उतरे हुए लोग हैं। पर, हार तो मिलना आसान काम नहीं है। प्रयत्न करने पर कुछ–न–कुछ प्राप्त अवश्य कर लेते हैं। अब वह मोती हो कि घोंघा– यह अलग बात है। जैसी जिसकी इच्छा, जैसा जिसका प्रयत्न, वैसा ही उसे फल मिलता है– 'शुभ अरु अशुभ करम अनुसारी। ईश देइ फल हृदय विचारी।'' (तुलसीदास) मन में सोचना अलग बात है, पर सोचे हुए को चरितार्थ करना, मूर्त रूप प्रदान करना अलग है। संकल्प जब अविरत साधना में परिणत होता है, तब कार्यसिद्धि होती है। 'हितोपदेश' में कहा गया है–

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।
नहिं सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ।।

अर्थात् उद्यम (प्रयत्न) करने से ही कार्य की सिद्धि होती है, केवल मन में इच्छा करने से नहीं। सोते हुए सिंह के मुख में हिरन प्रवेश नहीं करता। मतलब कि शेर को भी हिरन का शिकार करना पड़ता है, अनायास वह उसके मुँह में नहीं आ जाता। इसलिये हे विद्यार्थियो! उद्यम करो। यदि नाम चाहते हो, सम्मान चाहते हो, तो काम करो। जितना बड़ा काम होगा, उतना ऊँचा नाम होगा। आवश्यक नहीं है कि पहले ही दिन से बड़ा काम हो जाये। इसके लियें धैर्य की आवश्यकता होती है। सतत प्रयत्न की आवश्यकता होती है। निरन्तर संलग्नता की आवश्यकता होती है। परिश्रम की, लगन की, ध्येयनिष्ठता की आवश्यकता होती है। नेक काम करने में अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ भी सामने आती हैं। पर जो उनसे पार पा लेता है, वही विजेता बनता है। प्रसिद्ध छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद की पंक्तियाँ हैं–

है नीड़ मनोहर कृतियो का, यह विश्व कर्म–रंगस्थल है।
है परम्परा लग रही यहाँ, ठहरा जिसमें जितना बल है।।

यह संसार कर्म की रंगस्थली है। यहाँ की परम्परा ही है कि जिसमें जितनी क्षमता होगी, वह उतना ही बड़ा अपना स्थान बना पायेगा। यह बात ठीक है कि हर कोई हरेक की बराबरी नहीं कर सकता। सबकी अपनी–अपनी सामर्थ्य होती है। हरेक की अपनी सीमा होती है। अपनी सामर्थ्य और सीमा के भीतर ही हमें काम करना होता है। पर बात यही है कि अपनी सामर्थ्य भर तो प्रयास किया जाये। हम कहाँ अपनी सामर्थ्य का भी पूरा उपयोग कर पाते हैं! हिन्दी गजल के एक बड़े हस्ताक्षर दुष्यन्त कुमार का शेर है–

कौन कहता है कि आसमान में सुराख हो नहीं सकता,
एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारो!

तो बात तबीयत भर प्रयास करने की है। यह भी न सही तो राष्ट्रकवि की उपमा से विभूषित मैथिलीशरण गुप्त जी के इस गीत को ही याद कर लिया जाये–

नर हो, न निराश करो मन को,
कुछ काम करो, कुछ काम करो।
जग में रहकर कुछ नाम करो।

कुछ काम और नाम करने के लिये हमें अपने भीतर की निराशा को निकाल बाहर करना पड़ेगा और अपने आत्मबल को, अपने भीतर के उछाह को बनाये रखना पड़ेगा। निरन्तर प्रयास जारी रखना पड़ेगा। अपनी शक्तियों को साधना और उपयोग में लाना पड़ेगा। अपनी कमियों को पहचानना और सुधारना पड़ेगा। चुनौतियों से टकराना पड़ेगा। संघर्षों से पार पाना होगा। कुछ करके दिखाना पड़ेगा। तभी हम जय–जयकार की अपेक्षा कर सकते हैं, क्योंकि बकौल कविवर श्री सोहनलाल द्विवेदी–

असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो।
क्या कमी रह गयी, देखो और सुधार करो।
जब तक न सफल हो, नींद चैन की त्यागो तुम।
संघर्षों का मैदान छोड़ मत भागो तुम।
कुछ किये बिना ही जय–जयकार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।।

जय भारत, जय भारती!

हिन्दू–धर्म का मर्म

–महात्मा गांधी

अब जरा इस बात पर विचार करें कि हिन्दू–धर्म का मर्म क्या है, वह कौन–सी चीज है जिससे उन अनेक सन्त–महात्माओं ने प्रेरणा ग्रहण की जिनका इतिहास में उल्लेख हुआ है। क्या कारण है कि इसने संसार को इतने सारे तत्त्वचिन्तक दिये? हिन्दू–धर्म में क्या है कि इसके भक्त सदियों से इस पर न्यौछावर होते आये हैं? क्या इसमें अस्पृश्यता को देख–देखकर भी वे इस पर न्यौछावर होते रहे? अस्पृश्यता विरोधी संघर्ष के दौरान अनेक कार्यकर्ताओं ने मुझसे हिन्दू–धर्म का सार–तत्त्व जानना चाहा है। उनका कहना है कि हमारे पास न तो इस्लाम की तरह कोई 'कलमा' है और न जैसे बाइबिल में, 3–16 सेंट जॉन में ईसाई धर्म की केन्द्रीय मान्यता का उल्लेख हुआ है, वैसा कुछ है। वे पूछते हैं, हमारे पास कोई ऐसी चीज है या नहीं जो अत्यन्त चिन्तनशील तथा दुनियादारी में लगे

दोनों तरह के हिन्दुओं को सन्तोष दे सके ? कुछ लोगों का कहना है– और अकारण नहीं है– कि गायत्री मन्त्र ऐसा ही है। मैंने 'गायत्री मन्त्र' के अर्थ को समझकर शायद हजारों बार उसका जाप किया है। लेकिन मुझे अब भी लगता है कि वह मन्त्र मेरी पूरी आध्यात्मिक पिपासा को तृप्त नहीं कर पाया। फिर, आप जानते ही हैं कि वर्षों से मैं 'भगवद्गीता' का भक्त हूँ और मैंने कहा है कि इससे अपनी सभी समस्याओं का समाधान मुझे मिलता रहा है तथा शंका और कठिनाई के सैकड़ों प्रसंगों पर इसने मेरे लिए कामधेनु का, मार्गदर्शिका और सहायिका का काम किया है। ऐसा कोई प्रसंग मुझे याद नहीं आता जब इसने मुझे निराश किया हो। लेकिन यह ऐसी पुस्तक नहीं है जिसे मैं यहाँ उपस्थित सभी श्रोताओं के सामने उनके स्वीकारार्थ रख सकूँ। प्रार्थना पूर्ण मन से इसके गहन अध्ययन–मनन के उपरान्त ही आत्मा के लिए इसके पयोधर में संचित परम पौष्टिक दूध हमें प्राप्त हो सकता है।

लेकिन एक मन्त्र ऐसा अवश्य है जिसमें मैंने हिन्दू–धर्म के समस्त सार को समाविष्ट माना है। वही मन्त्र मैं आपको सुनाने जा रहा हूँ। मेरा खयाल है, आपमें से बहुत से लोग 'ईशोपनिषद्' के बारे में तो जानते ही होंगे। वर्षों पूर्व इसे मैंने अनुवाद और टीका सहित पढ़ा था। यरवदा जेल में मैंने इसे कंठाग्र कर लिया। लेकिन तब मैं इस पर उस प्रकार मुग्ध नहीं हुआ था जिस प्रकार कि पिछले कुछ महीनों से हो गया हूँ। और अब मैं अन्तिम रूप से इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि यदि सारे उपनिषद् तथा हमारे अन्य सारे धर्मग्रन्थ अचानक नष्ट हो जायें और यदि 'ईशोपनिषद्' का केवल पहला श्लोक हिन्दुओं की स्मृति में कायम रहे तो भी हिन्दू–धर्म सदा जीवित रहेगा।

यह मन्त्र चार हिस्सों में बँटा हुआ है। पहला हिस्सा है 'ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।' मैं इसका अर्थ इस प्रकार करता हूँ– विश्व में हम जो कुछ देखते हैं, सबमें ईश्वर की सत्ता व्याप्त है। फिर दूसरा और तीसरा हिस्सा इस प्रकार है– 'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः।' इन्हें दो हिस्सों में बाँटकर उनका अनुवाद इस तरह करता हूँ– इसका त्याग करो और इसका भोग करो। इसका एक दूसरा अनुवाद भी है, यद्यपि उसका भी अर्थ प्रायः वही है। वह दूसरा अनुवाद है– वह तुम्हें जो कुछ दे, उसका भोग करो। इस अनुवाद की दृष्टि से भी इसके दो हिस्से तो किये ही जा सकते हैं। इसके बाद आता है इसका अन्तिम और सबसे महत्त्वपूर्ण हिस्सा : 'मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।' इसका मतलब है किसी की सम्पत्ति को लोभ की दृष्टि से मत देखो। इस प्राचीन उपनिषद् के शेष सभी मन्त्र इस प्रथम मन्त्र के भाष्य हैं या यों कहिए कि उनमें इसी का पूरा अर्थ उद्घाटित करने का प्रयत्न किया गया है। जब मैं इस मन्त्र को 'गीता' को ध्यान में रखकर या 'गीता' को इस मन्त्र को ध्यान में रखकर पढ़ता हूँ तो मुझे लगता है कि 'गीता' भी इसी मन्त्र का भाष्य है। मुझे तो लगता है, यह मन्त्र समाजवादियों और साम्यवादियों, तत्त्वचिन्तकों और अर्थशास्त्रियों सबका समाधान कर देता है। जो लोग हिन्दू–धर्म के अनुयायी नहीं हैं उनसे मैं यह कहने की धृष्टता करता हूँ कि यह उन सबका भी समाधान करता है। और अगर सही है– मैं तो मानता हूँ कि सही है– तो फिर आपको हिन्दू धर्म की ऐसी किसी चीज को महत्त्व देने की जरूरत नहीं है जो इस मन्त्र के अर्थ से असंगत हो या उसके विरुद्ध हो। कोई साधारण आदमी इससे ज्यादा और क्या जानना चाहेगा कि एक ही ईश्वर और जीवमात्र का एक ही स्रष्टा और नियन्ता विश्व के कण–कण में व्याप्त है।

इस मन्त्र के तीन हिस्से सीधे पहले हिस्से में से फलित होते हैं। यदि आप यह मानते हैं कि ईश्वर अपनी समस्त सृष्टि में व्याप्त है तो आपको यह भी मानना पड़ेगा कि आप ऐसी किसी वस्तु का उपभोग नहीं कर सकते जो उसकी दी हुई नहीं हो। और यह देखते हुए कि वह अपनी असंख्य सन्तानों का स्रष्टा है, यह तो स्पष्ट ही है कि आप किसी की भी सम्पदा को लोभ की दृष्टि से नहीं देख सकते। अगर आप यह समझते हैं कि आप भी उसकी सृष्टि के असंख्य प्राणियों में से एक हैं तो सब कुछ का त्याग करके उसे उसके चरणों पर अर्पित कर देना आपका धर्म हो जाता है। इसका मतलब यह हुआ कि त्याग का यह कार्य मात्र स्थूल त्याग नहीं है, बल्कि दूसरे या नये जन्म का प्रतीक है। यह कोई अज्ञानजनित नहीं, बल्कि विचारपूर्वक किया हुआ कार्य होता है। इसलिए यह एक नवजन्म ही होता है। चूँकि देहधारी को भोजन, पानी और वस्त्र चाहिए ही, इसलिए उसे जिस किसी वस्तु की आवश्यकता होती है, वह ईश्वर से हो माँगता है। और यह सब उसे अपने त्याग के स्वाभाविक पुरस्कार–स्वरूप प्राप्त हो जाता है। मानो इतना पर्याप्त न हो, इसलिए इस मन्त्र के अन्त में एक भव्य विचार रखा गया है– किसी की संपदा को लोभ की दृष्टि से न देखो। इस शिक्षा को अपने जीवन में उतारते ही आप संसार के सभी प्राणियों के साथ शान्ति और सौहार्द के साथ रहनेवाले समझदार विश्व नागरिक बन जाते हैं। यह मनुष्य की इहलोक और परलोक की ऊँची से ऊँची आकांक्षाओं को तृप्त करता है।

(राष्ट्रीय पुस्तक न्यास से प्रकाशित पुस्तक 'हिन्दू धर्म क्या है' से साभार)

(बुद्ध–प्रसंग)

बुद्ध की बैठी हुई मूर्तियाँ

भगवान बुद्ध की मुद्राएं उनके जीवन से संबंधित है। उदाहरणार्थ मार–विजय के समय भूमिस्पर्श मुद्रा तथा सारनाथ में धर्म–प्रचार के समय धर्म–चक्र–प्रवर्तन मुद्रा। बोधगया में बोधि प्राप्त कर और मार को विजय कर पद्मासन में बैठे बुद्ध पृथ्वी को साक्षी बनाते हुए उसे आवाहन करते हैं। इस भाव में बुद्ध के हाथ की उंगली भूमि की ओर इंगित कर रही है। सारनाथ केंद्र की निर्मित भूमिस्पर्शमुद्रा की अनेक प्रतिमाएं सारनाथ संग्रहालय में सुरक्षित हैं। भूमि को स्पर्श करती हुई मुद्रा में स्थित समस्त मूर्तियों में संघाटी दांयें कंधे को ढकती हुई नहीं प्रदर्शित की जाती है। सिर के चारों ओर अलंकृत प्रभामंडल तथा मस्तक के ऊपर बोधिवृक्ष बना होता है। मूर्ति के दाएं ओर धनुषधारी मार तथा बाईं ओर मार की पुत्रियों की आकृतियां बनायी गयी हैं। प्रभामंडल के ऊपरी भाग के दोनों ओर दो–दो राक्षस दिखाये गये हैं। इस प्रकार की अनेक मूतियां खंडित हैं परंतु अनेक लक्षणों से युक्त होने के कारण उनकी पहचान सरलता से हो जाती है। धर्मचक्रमुद्रा में भगवान बुद्ध पद्मासन में बैठे हैं। दोनों हाथ वक्षस्थल के सामने स्थित है। दाएं हाथ का अंगूठा और कनिष्ठिका बाएं हाथ की मध्यमिका को छूती दिखलाई पड़ती है। सारनाथ में दिया गया पहला उपदेश जिसे धर्मचक्रप्रवर्तन की संज्ञा दी गयी है, को शिल्पकला में सुंदर रीति से प्रदर्शित किया गया है । भगवान बुद्ध इसिपतन में पद्मासन में बैठे धर्म की शिक्षा दे रहे हैं। क्योंकि बुद्ध ने नवीन धर्म का प्रवर्तन किया इसलिए यह घटना 'धर्मचक्रप्रवर्तन' के नाम से प्रसिद्ध है । धर्मचक्रप्रवर्तन की मुद्रा में सार–नाथ की एक मूर्तिकला के सर्वोत्कृष्ट उदाहरणों में है। इसमें बुद्धमूर्ति के आसन के मध्यभाग में एक चक्र बना है जिसके दोनों और दो मृगों की आकृतियां दिखलाई गयी है। इस चक्र के दाएं तीन और बाएं मनुष्यों की दो मूर्तियां है, जिन्हें पंच भद्र–वर्गीय भिक्षु माना गया है। यह बुद्ध की सर्वोत्कृष्ट मूर्ति है, जिसमें अंगों की भाव–भंगी, सौंदर्य, औचित्य और भावव्यंजना अनुपम है। इसी तरह की कुछ बुद्ध की मूर्तियां कलकत्ता संग्रहालय में सुरक्षित हैं। किसी–किसी मूर्ति के अधोभाग में पंच–भद्र–वर्गीय भिक्षुओं को आकृतियां नहीं बनी हैं। इसके अतिरिक्त कुछ मूतियां ध्यानमुद्रा में मिली है। इसमें पद्मासन में बैठे बुद्ध ध्यानमग्न हैं। दोनों करतल गोद में एक के ऊपर दूसरा प्रदर्शित किया गया है। यह बुद्धत्व प्राप्ति के लिए ध्यानावस्थित होने की ओर संकेत करता है।

(उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ से प्रकाशित डॉ. राजेन्द्र पाण्डेय की पुस्तक 'भारत का सांस्कृतिक इतिहास' से साभार)

नव संवत्सर के अवसर पर

–लक्ष्मीनारायण भाला "लक्खीदा'

भारत के ऋषि–मुनि–वैज्ञानिक,
रखते ध्यान प्रकृति का।
ग्रह–नक्षत्र–पृथ्वी की गति से,
ज्ञान काल–गणना का ।।ध्रु।।

ब्रह्मा जी ने सृष्टि रचायी,

जो ब्रह्मांड कहाया।
रचकर नभ–जल–पवन–अनल–कण,
पंचतत्व विकसाया।।
पंचतत्व से निर्मित तन में,
कर दी प्राण–प्रतिष्ठा।
प्राणि–जगत में मानव तन को,
श्रेष्ठ मान दिलवाया ।।१।।

भारत के ऋषि–मुनि–वैज्ञानिक...
मानव में नर–नारी–किन्नर,
प्राणि–जगत बहु–काया।
वनस्पति में स्थापित कर दी,
फल–फूलों की माया।।
सूर्य–चंद्र–ग्रह–नक्षत्रों से,
खगोल शास्त्र रचाया।
पृथ्वी–राशि–तारों ने मिलकर,
भू–मंडल रचवाया।।२।।

भारत के ऋषि–मुनि–वैज्ञानिक...
प्रकृति–धर्म है प्राणि–जगत का,
पालन पोषण करना।
वर्षा–शीत–ग्रीष्म के क्रम से,
कर दी ऋतु–संरचना।
पूनम और अमावस मिलकर,
करते मासिक गणना।।
सूर्य, चंद्र की गति से होती,
सूक्ष्म काल की गणना।।३।।

भारत के ऋषि–मुनि वैज्ञानिक...
सूक्ष्म काल–गणना की खातिर,
करी सूक्ष्म की यात्रा।
सात दिवस, सप्ताह कहाया,
दिवस, रात और दिन का।
अष्ट प्रहर में दिवस बँट गया,
था चौबीस घंटों का।
घंटे मिनट–क्षणों में बँट गए,
हिसाब है पल–पल का।।४।।

भारत के ऋषि–मुनि वैज्ञानिक...
सूर्य–गति और चंद्र–गति में,
है अंतर बहुतेरा।
अगणित ग्रह–नक्षत्र संचलित,
स्थिर केवल ध्रुव तारा।।
इस स्थिरता का लिया सहारा,
तालमेल बिठलाया।
तीन वर्ष में अधिक मास को ,
इसीलिए जुड़वाया।।५।।

भारत के ऋषि–मुनि वैज्ञानिक...
नव संवत्सर के अवसर पर,
पूजन हो प्रकृति का।
जिसके उर में छिपा हुआ है,
रहस्य कालगणना का।।
तीन वर्ष के अंतराल में,
अधिक मास है आता।
साठ वर्ष के अंतराल में,
केवल एक दिन बढ़ता।।६।।

भारत के ऋषि–मुनि वैज्ञानिक
रखते ध्यान प्रकृति का।...
(प्रसिद्ध चिन्तक एवं लेखक)

धधकती दुनिया में शांति का स्वर : भारत

–वेदप्रकाश

धधकती दिशाओं में बारूद की गंध घुली है,
समय की देह पर जैसे पीड़ा की रेखा खुली है,
ईरान की रातों में सिसकियों का चाँद उतरा,
इजराइल की धूप भी आज कहीं धुँधली है।

शक्ति के मद में अंधा कोई देश जब गरजता है,
धरती का हर कोना भीतर ही भीतर सिहरता है,
विजय के नगाड़े बजते हों भले आकाशों में,
पर हर स्वर में मानवता का विलाप ही बहता है।
दूर कहीं बर्फीली सरहदों पर भी ज्वाला जलती है,
रूस और यूक्रेन की धरती अब भी पीड़ा सहती है,
बरसों से थमी नहीं यह आहों की वर्षा,
हर सुबह वहाँ युद्ध की नई कथा कहती है।
कहीं पर्वतों के साए में भी तनाव पनपता है,
पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच भी धुआँ उठता है,
सीमाएँ खिंची हैं, पर दिलों में दरारें गहरी हैं,
हर कदम पर अविश्वास का काँटा चुभता है।

जहाँ कभी लोरियों में सपनों का संसार था,
वहीं अब राख उड़ी है, उजड़ा हर द्वार है,
माँ की सूनी गोद में इतिहास कराहता है,
बचपन का हर अक्षर आज लहूलुहान पुकार है।
समंदर भी जैसे भय का गीत सुनाता है,
हॉर्मुज जलडमरूमध्य हर लहर में संकट दोहराता है,
तेल की हर बूँद अब अग्नि–सी दहकती है,
महँगाई हर आँगन में चुपके से उतर आती है।
बाजारों की साँसें भी अब थमी–थमी सी हैं,
निफ्टी और सेंसेक्स की धड़कनें डरी–डरी सी हैं,
अंकों के इस खेल में सपनों का मूल्य टूटता,
आम जन की आशाएँ कहीं थकी–थकी सी हैं।

हल की लकीरों में भी अब कंपन उतर आया,
डीजल की ज्वाला ने श्रम का मोल बढ़ाया,
खाद की थैली जैसे बोझ बनी कंधों पर,
किसान का हर स्वप्न समय ने फिर आजमाया।
दुकानों में बैठा व्यापारी गणना में खोया है,
लाभ–हानि के बीच हर चेहरा कुछ रोया है,
ग्राहक की मुट्ठी में सिमटी हुई इच्छाएँ,
संयम ही अब जीवन का सच्चा संजोया है।
पर इस कोलाहल में भारत का स्वर अलग है,
न युद्ध की वंदना, न किसी का पक्षपात प्रबल है,
शांति का दीप लिए संतुलन की राह पर चलता,
संवाद ही समाधान है– यही उसका संकल्प अटल है।

जन–जन के मन में भी यही भाव उमड़ता है,
नफरत से नहीं, सह–अस्तित्व से जग सँवरता है,
कोई दुआ में शांति माँगे, कोई प्रार्थना में करुणा,
भारत का हर दिल मानवता के संग ही धड़कता है।
राख तले अब भी एक चिनगारी जीवित है,
हर आँसू में करुणा का सागर संचित है,
जब–जब अंधेरा अपने शिखर पर जाता है,
तब–तब मानवता का दीप होता प्रज्वलित है।

यही पुकार है समय की, यही सत्य अनंत;
नहीं युद्ध में गौरव, नहीं विनाश में अंत,
जब शांति की सरिता फिर धरती पर बहेगी,
तभी मुस्कुराएगा जीवन, तभी फैलेगी सुमन–सुगंध।
(पूर्व छात्र– एम. ए. हिंदी; संपर्क– 9305272612)

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में पं. दीनदयाल उपाध्याय की पुण्यतिथि पर विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु में दिनांक 11 फरवरी 2026 को पंडित दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ के तत्वावधान में पंडित दीनदयाल उपाध्याय की 58वीं पुण्यतिथि के अवसर पर एक विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। व्याख्यान का विषय था– "वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों की प्रासंगिकता"।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक (मध्य प्रदेश) के पूर्व कुलपति एवं प्रख्यात राजनीतिक चिंतक प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी ने अपने उद्बोधन में कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जीवन और चिंतन "साधना से सिद्धि" का दर्शन है। उनका संपूर्ण जीवन साधुता, सादगी और मूल्यनिष्ठा से अनुप्राणित रहा। उन्होंने राजनीति को केवल सत्ता का माध्यम नहीं, बल्कि मानव–केंद्रित व्यवस्था का उपकरण माना।

प्रो. त्रिपाठी ने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानववाद व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के समग्र एवं संतुलित विकास का दार्शनिक आधार है। यह दर्शन भारतीय ज्ञान परंपरा की जड़ों से जुड़ा हुआ है और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के माध्यम से राष्ट्रबोध को सशक्त करता है।

उन्होंने कहा कि दीनदयाल जी का मानना था कि किसी भी राष्ट्र के विकास में संगठित प्रयास अत्यंत आवश्यक हैं तथा विपरीत परिस्थितियों में भी मूल्य और मानकों से समझौता न करना ही व्यक्ति की वास्तविक पहचान है।

मुख्य वक्ता ने आगे कहा कि "मैं" के भाव से ऊपर उठकर "हम" के भाव में जीना ही मानवता का सार है। साधक, सिद्ध, सुजान और शुद्धता– जीवन के ये चार चरण दीनदयाल जी के चिंतन का आधार रहे। उनका अंत्योदय का सिद्धांत अर्थात समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास का लाभ पहुँचाना– आज भी लोककल्याणकारी राज्य की मूल प्रेरणा है। स्वदेशी, आत्मनिर्भरता, राजनीति में नैतिकता, ग्राम–केंद्रित विकास, समाज और राज्य के बीच समन्वय, लोकतंत्र में भागीदारी और उत्तरदायित्व– ये सभी विचार 2047 के विकसित भारत की दिशा को प्रशस्त करते हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कला संकाय की अधिष्ठाता प्रो. नीता यादव ने की। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में उन्होंने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय के लिए विकास का वास्तविक मानदंड आंकड़े या शहरी विस्तार नहीं, बल्कि अंतिम व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन है। 2047 का विकसित भारत वही होगा जो आत्मनिर्भर होने के साथ–साथ संवेदनशील और समावेशी भी हो।

पूर्व अधिष्ठाता कला संकाय प्रो. हरीशकुमार शर्मा ने कहा कि दीनदयाल उपाध्याय का दर्शन आज के समय में और अधिक प्रासंगिक हो गया है। स्वदेशी और आत्मनिर्भरता का उनका संदेश राष्ट्र को सशक्त बनाने की आधारशिला है। उन्होंने सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम की विषय–प्रस्तावना एवं स्वागत उद्बोधन दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ के समन्वयक एवं कार्यक्रम संयोजक डॉ. सच्चिदानंद चौबे ने प्रस्तुत करते हुए कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय का चिंतन समग्र मानवता के उत्थान का चिंतन है। उन्होंने व्यक्ति से राष्ट्र तक की उन्नति का मूल मंत्र अपने चिंतन में दिया है। उनका एकात्म मानववाद मनुष्य को केवल आर्थिक इकाई नहीं मानता है, अपितु शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा इन सबका संतुलन ही समग्र विकास है । कार्यक्रम का प्रभावी संचालन डॉ. अविनाश प्रताप सिंह द्वारा किया गया।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ अश्वनी कुमार, परीक्षा नियंत्रक दीनानाथ यादव ने भी पंडित दीनदयाल उपाध्याय के चित्र पर श्रद्धा–सुमन अर्पित किये।

इस अवसर पर प्रो. दीपक बाबू, प्रो. सत्येंद्र दुबे, डॉ. सुनीता त्रिपाठी, डॉ. अखिलेश दीक्षित, डॉ. मनीष शर्मा, डॉ. नीरज सिंह, डॉ. विमल चंद्र वर्मा, डॉ. हृदयकांत पांडेय, डॉ. रविकांत शुक्ला, डॉ. जयसिंह यादव, डॉ. मयंक कुशवाहा, डॉ. आभा द्विवेदी, डॉ. सरिता सिंह, डॉ. यशवंत यादव, डॉ मनीषा बाजपेई डॉ. अमित साहनी, डॉ. रेनू त्रिपाठी, श्री अब्दुल हफीज, शिवम शुक्ला सहित विश्वविद्यालय एवं संबद्ध महाविद्यालयों के अनेक शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का आरम्भ पंडित दीनदयाल उपाध्याय के चित्र पर माल्यार्पण के साथ हुआ और कार्यक्रम का समापन वंदेमातरम के गायन के साथ हुआ।

बी.बी.ए. विभाग द्वारा अतिथि व्याख्यान का आयोजन

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के बी. बी. ए. विभाग द्वारा आज "अंतरराष्ट्रीय विपणन" विषय पर एक विशेष अंतरराष्ट्रीय अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। यह व्याख्यान Sona Klucarova, प्रोफेसर, University of Nebraska Omaha, संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा ऑनलाइन दिया गया।

कार्यक्रम का आयोजन बी. बी. ए. विभाग के संयोजक डॉ. विमल चन्द्र वर्मा एवं सह–संयोजक डॉ. नीरज कुमार सिंह द्वारा किया गया, जबकि विभागाध्यक्ष डॉ. अखिलेश कुमार दीक्षित के मार्गदर्शन में कार्यक्रम संपन्न हुआ।

अपने व्याख्यान में प्रो. सोना क्लुकारोवा ने अंतरराष्ट्रीय विपणन के विविध आयामों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि विभिन्न देशों में उपभोक्ता व्यवहार एवं उपभोग के पैटर्न भिन्न–भिन्न होते हैं। उन्होंने संस्कृति, परंपराओं, सामाजिक मूल्यों और आर्थिक परिस्थितियों के आधार पर बाजारों की संरचना में आने वाले अंतर को विस्तार से समझाया। उन्होंने यह भी बताया कि किसी भी कंपनी के लिए वैश्विक बाजार में सफल होने हेतु स्थानीय संस्कृति की समझ अत्यंत आवश्यक है।

प्रो. क्लुकारोवा ने उदाहरणों के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि किस प्रकार सांस्कृतिक विविधता, उपभोक्ता की पसंद–नापसंद और जीवनशैली अंतरराष्ट्रीय विपणन रणनीतियों को प्रभावित करती है। विद्यार्थियों ने व्याख्यान के दौरान उत्साहपूर्वक सहभागिता की तथा अपने प्रश्नों के माध्यम से विषय की गहराई को समझा।

विश्व आर्द्रभूमि दिवस 2026 के अवसर पर सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के विद्यार्थी पुरस्कृत

विश्व आर्द्रभूमि दिवस 2026 के अवसर पर वन विभाग, सिद्धार्थनगर द्वारा 2 फरवरी को पक्षी फोटोग्राफी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य आर्द्रभूमियों के संरक्षण के प्रति जन–जागरूकता बढ़ाना था। इस प्रतियोगिता में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की और अपनी फोटोग्राफी कला के माध्यम से जैव–विविधता के संरक्षण का संदेश दिया।

प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों में प्रीति कुशवाहा ने प्रथम पुरस्कार, हर्षिता सिंह ने द्वितीय पुरस्कार तथा

सोनी यादव ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त कर विश्वविद्यालय का नाम गौरवान्वित किया। विजेताओं को प्रभागीय वनाधिकारी, सिद्धार्थनगर, श्रीमती नीला एम. द्वारा पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के डॉ. आशुतोष कुमार वर्मा (विभागाध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान विभाग) एवं डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव (विभागाध्यक्ष, प्राणी विज्ञान विभाग) की गरिमामयी उपस्थिति रही। दोनों शिक्षकों ने विद्यार्थियों को प्रकृति संरक्षण, आर्द्रभूमियों के महत्व तथा जैव–विविधता के अध्ययन के प्रति प्रेरित किया।

कार्यक्रम के संदर्भ में माननीय कुलपति, प्रो. कविता शाह ने अपने संदेश में कहा कि "आर्द्रभूमियाँ केवल जलस्रोत नहीं हैं, बल्कि वे जैव–विविधता, पर्यावरण संतुलन और स्थानीय आजीविका की आधारशिला हैं। ऐसे आयोजनों से विद्यार्थियों में प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता और जिम्मेदारी का भाव विकसित होता है।" उन्होंने छात्रों को इस उपलब्धि के लिए शुभकामनाएँ दीं।

आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ के निदेशक, प्रो. सौरभ ने इस अवसर पर कहा कि विश्वविद्यालय अकादमिक शिक्षा के साथ–साथ पर्यावरणीय चेतना को भी बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि पुरस्कृत विद्यार्थियों की उपलब्धि एवं शिक्षकों का मार्गदर्शन सराहनीय है। विद्यार्थियों की यह सक्रिय भागीदारी NEP–2020 के बहुआयामी एवं अनुभवात्मक शिक्षण दृष्टिकोण को साकार करती है।

विज्ञान संकायाध्यक्ष, प्रो. प्रकृति राय ने कहा कि पक्षी फोटोग्राफी जैसे रचनात्मक प्रयास विद्यार्थियों को प्रकृति से जोड़ने के साथ–साथ संरक्षण की वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक समझ विकसित करते हैं। उन्होंने सभी विद्यार्थियों की उपलब्धि पर उनको बधाई दी।

कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य लोगों को उनके आसपास की आर्द्रभूमियों के महत्व से अवगत कराना, उनके संरक्षण हेतु रणनीतियाँ विकसित करना तथा "आर्द्रभूमियाँ और पारंपरिक ज्ञान" विषय के अंतर्गत मझौली सागर को एक महत्वपूर्ण आर्द्रभूमि के रूप में पहचान दिलाना रहा।

इतिहास विभाग के विद्यार्थियों ने यूजीसी–नेट परीक्षा में लहराया विश्वविद्यालय का परचम

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के इतिहास विभाग के छात्र–छात्राओं ने यूजीसी–नेट परीक्षा उत्तीर्ण कर विश्वविद्यालय एवं विभाग का गौरव बढ़ाया है। इस उल्लेखनीय सफलता ने न केवल इतिहास विभाग, बल्कि संपूर्ण विश्वविद्यालय परिवार को गौरवान्वित किया है।

इस उपलब्धि पर कुलपति प्रो. कविता शाह ने सफल विद्यार्थियों को आशीर्वाद एवं शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि यह सफलता उनके परिश्रम, अनुशासन और समर्पण का प्रतिफल है। उन्होंने इसे विश्वविद्यालय की शैक्षणिक गुणवत्ता और उत्कृष्टता का प्रमाण बताया। कला संकाय की अधिष्ठाता प्रो. नीता यादव ने विद्यार्थियों को साधुवाद देते हुए कहा कि इतिहास विभाग की यह उपलब्धि कला संकाय के लिए भी गर्व का विषय है और इससे अन्य विद्यार्थियों को भी प्रेरणा मिलेगी।

इतिहास विभाग के अध्यक्ष डॉ. सच्चिदानंद चौबे ने सफल अभ्यर्थियों को आशीर्वचन देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की तथा उन्हें निरंतर अध्ययन और शोध के प्रति समर्पित रहने का संदेश दिया। डॉ. यशवन्त यादव ने विद्यार्थियों को शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि सतत प्रयास, सकारात्मक सोच और सही मार्गदर्शन से ही उच्च उपलब्धियाँ प्राप्त होती हैं। राजनीति विज्ञान विभाग के पूर्व प्रभारी अध्यक्ष डॉ. अविनाश प्रताप सिंह ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि आज समाज, राष्ट्र और परिवार को ऐसे ही प्रतिभाशाली एवं समर्पित युवाओं की आवश्यकता है, जो अपने ज्ञान और क्षमता से देश का नाम रोशन करें।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में A. I. कर्मशक्ति पर कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 18 फरवरी 2026 को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु में कुलपति प्रो. कविता शाह के मार्गदर्शन में 'ए. आई. कर्मशक्ति कार्यशाला' का आयोजन विश्वविद्यालय के गौतम बुद्ध प्रेक्षागृह में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कार्यशाला का उद्देश्य विश्वविद्यालय के कर्मचारियों एवं अधिकारियों को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (A. I.) के व्यावहारिक उपयोग से अवगत कराना तथा प्रशासनिक कार्यों में तकनीक के प्रभावी एवं उत्तरदायी प्रयोग हेतु प्रेरित करना था।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. अश्वनी कुमार ने अपने विस्तृत वक्तव्य में वर्तमान समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (A. I.) की बढ़ती भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस केवल तकनीकी उपकरण नहीं, बल्कि प्रशासनिक दक्षता, पारदर्शिता और उत्तरदायित्व को सुदृढ़ करने का सशक्त माध्यम है। उन्होंने विशेष रूप से कार्यालयीन कार्यों जैसे पत्र लेखन, रिपोर्ट निर्माण, डेटा विश्लेषण, अभिलेख संधारण, अनुवाद तथा फाइल प्रबंधन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रभावी एवं सुव्यवस्थित प्रयोग के व्यावहारिक तरीके साझा किए। उन्होंने यह भी रेखांकित

किया कि ए. आई. का उपयोग सदैव नैतिकता, गोपनीयता एवं संस्थागत मर्यादाओं के अनुरूप होना चाहिए, जिससे कार्य–संस्कृति में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सके।

इस अवसर पर परीक्षा नियंत्रक दीनानाथ यादव ने भी "ए आई का प्रयोग और कार्यालय कार्य–संस्कृति" विषय पर अपना उद्‌बोधन प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि डिजिटल युग में कार्य संस्कृति को समयानुकूल बनाना अत्यंत आवश्यक है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित तकनीकों के माध्यम से कार्यों की गति, शुद्धता और पारदर्शिता में उल्लेखनीय वृद्धि संभव है। उन्होंने कर्मचारियों को नई तकनीकों को अपनाने, सतत प्रशिक्षण प्राप्त करने और कार्य निष्पादन में नवाचार को स्थान देने के लिए प्रेरित किया।

कार्यशाला में विश्वविद्यालय के सभी कार्यालय प्रमुख, कार्यालय सहायक तथा कर्मचारीगण उत्साहपूर्वक उपस्थित रहे। प्रतिभागियों ने प्रश्नोत्तर सत्र में सक्रिय सहभागिता करते हुए A. I. के व्यावहारिक उपयोग, डेटा सुरक्षा, दस्तावेज प्रबंधन तथा प्रशासनिक प्रक्रिया में इसके समावेशन से संबंधित जिज्ञासाएँ व्यक्त कीं।

कार्यक्रम के अंत में आयोजकों द्वारा मुख्य वक्ताओं के प्रति आभार व्यक्त किया गया तथा भविष्य में भी इस प्रकार की उपयोगी एवं तकनीक–आधारित कार्यशालाओं के नियमित आयोजन की प्रतिबद्धता दोहराई गई। कार्यशाला ने विश्वविद्यालय की प्रशासनिक कार्यप्रणाली को अधिक दक्ष, पारदर्शी एवं उत्तरदायी बनाने की दिशा में एक सार्थक पहल के रूप में नई संभावनाओं का द्वार खोला।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु में कुलपति प्रोफेसर कविता शाह की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में हिंदुस्तानी अकादमी उत्तर प्रदेश, प्रयागराज तथा सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के हिंदी विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 'भारत–नेपाल संबंधों का हिंदी भाषा एवं साहित्य पर प्रभाव' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ हुआ। 25 फरवरी, 2026 को आयोजित उद्‌घाटन सत्र में विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रस्तुत शोधपत्रों के संकलन पर आधारित संपादित पुस्तक 'भारत–नेपाल सम्बन्ध : हिन्दी भाषा, साहित्य एवं विविध आयाम' का विमोचन भी मंचासीन अतिथियों द्वारा किया गया। इस पुस्तक के संपादक हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. सत्येंद्र कुमार दुबे हैं।

उद्‌घाटन अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में प्रतिष्ठित साहित्यकार एवं दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के पूर्व आचार्य प्रोफेसर रामदेव शुक्ल ने भारत और नेपाल के संबंधों की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं मानवीय गहराई पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भारत–नेपाल संबंध मात्र राजनीतिक संबंध नहीं, अपितु संवेदना, परंपरा और आत्मीयता से जुड़े हुए हैं। राजनीतिक अस्थिरता या गतिरोध कभी–कभी प्रभाव डाल सकते हैं, परंतु दोनों देशों की मैत्री का आधार मानवीय संबंधों में निहित है, जो अटूट और अविच्छिन्न हैं।

उन्होंने इतिहास और राजनीति के अंतर्संबंध को रेखांकित करते हुए कहा कि भारत और नेपाल का रिश्ता 'रेत के टीले ' की भांति है, जिसके एक एक कण मिलकर एक मजबूत स्तम्भ का निर्माण करता है। धर्म, संस्कार और सांस्कृतिक परंपराएँ दोनों देशों को अभिन्न रूप से जोड़ती हैं। संकल्प मंत्र के उच्चारण से लेकर लोकजीवन की परंपराओं तक भारत और नेपाल की साझी विरासत स्पष्ट दिखाई देती है। उन्होंने यह भी कहा कि यद्यपि चीन प्रारंभ से नेपाल को अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास करता रहा है, परंतु भारत ने सदैव नेपाल के संरचनात्मक विकास और सहयोग को प्राथमिकता दी है। वर्तमान समय में भी मानवीय और संवेदनशील दृष्टिकोण से भारत का सहयोग नेपाल संबंधों को और सुदृढ़ करेगा। उन्होंने शिक्षण संस्थानों, विशेषकर सीमावर्ती क्षेत्रों में साहित्य और लोकगीतों पर शोध को बढ़ावा देने की आवश्यकता बताई।

विशिष्ट अतिथि के रूप में उत्तर प्रदेश सरकार के पूर्व बेसिक शिक्षा मंत्री प्रोफेसर सतीश चंद्र द्विवेदी ने कहा कि नेपाल का विकास सदैव भारत की चिंतनधारा के केंद्र में रहा

है। उन्होंने रेखांकित किया कि भारत–नेपाल संबंध राजनीति के आधार पर नहीं, बल्कि 'रोटी–बेटी' के आत्मीय संबंधों पर आधारित हैं। भाषा, संस्कृति और धर्म की समानता दोनों देशों को एक सूत्र में बाँधती है। देवनागरी लिपि दोनों देशों की भाषाओं की आधारशिला है। रामचरितमानस और भानुभक्त रामायण एक ही सांस्कृतिक परंपरा के दो स्वरूप हैं।

उन्होंने अयोध्या और जनकपुर, काशी और पशुपतिनाथ मंदिर, लुंबिनी तथा सारनाथ के आध्यात्मिक संबंधों का उल्लेख करते हुए कहा कि सीमा केवल भौतिक विभाजन है, जबकि सांस्कृतिक और आत्मीय संबंध अटूट हैं। सीमावर्ती क्षेत्रों में पारिवारिक और वैवाहिक संबंध इस आत्मीयता का सजीव उदाहरण हैं। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा अयोध्या–जनकपुर महामार्ग की योजना को द्विपक्षीय संबंधों की सुदृढ़ता की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कला संकाय की अधिष्ठाता प्रोफेसर नीता यादव ने की। अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में उन्होंने कहा कि भारत और नेपाल के संबंध सांस्कृतिक निरंतरता के प्रतीक हैं। साहित्य, लोकसंस्कृति और शैक्षिक संवाद इन संबंधों को गहराई प्रदान करते हैं। विश्वविद्यालयों का दायित्व है कि वे इन आयामों पर शोध को प्रोत्साहित करें। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह संगोष्ठी भविष्य में अकादमिक सहयोग के नए द्वार खोलेगी।

स्वागत उद्‌बोधन हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष एवं पूर्व अधिष्ठाता प्रोफेसर हरीशकुमार शर्मा द्वारा प्रस्तुत किया गया। उन्होंने कहा कि भारत–नेपाल संबंधों की जड़ें लोकजीवन में रची–बसी हैं और साहित्य इन संबंधों का जीवंत दर्पण है। भाषा और साहित्य भारत–नेपाल संबंधों के सांस्कृतिक साहित्यिक और सामाजिक जड़ों को और मजबूत करते हैं। वर्तमान और भविष्य के भारत–नेपाल राजनीतिक संबंधों को मजबूत करने में महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में

इसकी उपादेयता समझने की जरूरत है और उस दिशा में यह प्रयास महत्वपूर्ण है। यह संगोष्ठी इस प्रयास का एक हिस्सा है।

विषय प्रस्तावना संगोष्ठी के संयोजक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. सत्येंद्र कुमार दुबे द्वारा प्रस्तुत की गई। उन्होंने कहा कि यह संगोष्ठी केवल औपचारिक अकादमिक आयोजन नहीं, बल्कि अपने भौगोलिक और सांस्कृतिक संदर्भ से जुड़ा हुआ एक जीवंत प्रयास है। विश्वविद्यालय से मात्र दो किलोमीटर की दूरी पर भारत–नेपाल की अंतरराष्ट्रीय सीमा स्थित है, इसलिए इस आयोजन में 'स्थानीयता' को विशेष रूप से केंद्र में रखा गया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि भाषा और साहित्य दोनों देशों के बीच आत्मीयता के सेतु हैं। स्थानीय लोकजीवन, लोकगीत, पारिवारिक संबंध और सीमावर्ती क्षेत्रों की सांस्कृतिक एकता भारत–नेपाल संबंधों की वास्तविक शक्ति हैं। इस संगोष्ठी का उद्देश्य स्थानीयता के आधार पर दोनों देशों के बीच निकटता, आत्मीयता और संवाद के नए मार्ग प्रशस्त करना है।

इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. अश्वनी कुमार एवं परीक्षा नियंत्रक दीनानाथ यादव सहित विश्वविद्यालय एवं अन्य महाविद्यालयों के शिक्षक, शोधार्थी एवं छात्र–छात्राएँ उपस्थित रहे। प्रथम दिवस दो तकनीकी सत्रों का आयोजन हुआ, जिसमें दो दर्जन से अधिक प्रतिभागियों ने विभिन्न विषयों पर अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए। प्रथम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ. राम पाण्डेय ने की और मुख्य वक्ता डॉ. राणा प्रताप तिवारी रहे जबकि दूसरे सत्र के अध्यक्ष डॉ. विशाल गुप्ता तथा मुख्य वक्ता डॉ. बलजीत कुमार श्रीवास्तव रहे।

'भारत–नेपाल संबंधों का हिंदी भाषा और साहित्य पर प्रभाव' विषयक संगोष्ठी का सफल समापन

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर में हिंदुस्तानी अकादमी, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश के सहयोग से "भारत–नेपाल संबंधों का हिंदी भाषा और साहित्य पर प्रभाव" विषय पर आयोजित दो द्विवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन समारोह दिनांक 26.02.2026 को गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। संगोष्ठी ने भारत और नेपाल के सांस्कृतिक, भाषाई एवं साहित्यिक संबंधों की ऐतिहासिक गहराई और समकालीन प्रासंगिकता को व्यापक रूप से रेखांकित किया।

समापन सत्र को संबोधित करते हुए बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी के हिंदी विभाग के आचार्य एवं प्रतिष्ठित साहित्यकार प्रो. मुन्ना तिवारी ने कहा कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारत–नेपाल संबंधों पर इस प्रकार का आयोजन अत्यंत मूल्यवान और समयोचित है। उन्होंने कहा कि दोनों देशों का जनजीवन साझा मानवीय मूल्यों पर आधारित है। परिवार–जीवन, समाज–जीवन, लोक–जीवन और लोक–चेतना दोनों राष्ट्रों को उन्नति और परस्पर संबंधों के विकास का सशक्त माध्यम प्रदान करते हैं। सीमाएँ भले ही राजनीतिक रूप से अलग करती हों, किंतु चेतना, जीवन–मूल्य और जीवन–पद्धति दोनों देशों में समान है। छठ पर्व और साझा दार्शनिक परंपराएँ इस सांस्कृतिक एकात्मता की सजीव मिसाल हैं। हिंदी और नेपाली भाषा के विकास–चरणों में भी समानता है, अतः भाषा और साहित्य का प्रभाव दोनों देशों के संबंधों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ के संयुक्त सचिव डॉ. विनोद कुमार द्विवेदी ने अपने उद्बोधन में कहा कि भगवान राम और माता सीता भारत–नेपाल की साझा सांस्कृतिक विरासत के आधार स्तंभ हैं। उन्होंने महात्मा गौतम बुद्ध के जन्म और उनके करुणा एवं शांति–आधारित दर्शन को दोनों देशों के संबंधों का सशक्त सेतु बताया। उन्होंने कहा कि रामायण परंपरा और बौद्ध चिंतन भारत–नेपाल संबंधों को आध्यात्मिक ऊँचाई प्रदान करते हैं तथा दक्षिण एशिया में सांस्कृतिक समन्वय की दिशा दिखाते हैं।

विशिष्ट अतिथि के रूप में शिवपुर दीनबंधु इंस्टिट्यूट, कोलकाता विश्वविद्यालय (हावड़ा) के डॉ. सत्य प्रकाश तिवारी ने कहा कि भारत और नेपाल मित्र राष्ट्र हैं, जिनके बीच सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक और साहित्यिक समानताएँ अत्यंत घनिष्ठ हैं। जनकपुर से अयोध्या प्रतिवर्ष आने वाली प्रतीकात्मक बारात सांस्कृतिक एकात्मता का जीवंत उदाहरण है। भाषाई आधार पर दोनों देश निकट हैं। भारत में नेपाली भाषा को संवैधानिक मान्यता प्राप्त है तथा नेपाल में हिंदी भाषा व्यापक रूप से स्वीकार्य है। उन्होंने महात्मा गौतम बुद्ध को भारत–नेपाल संबंधों का "सांस्कृतिक एंबेसडर" बताया और बौद्ध साहित्य की भूमिका को रेखांकित किया।

उन्होंने भारतेंदु हरिश्चंद्र और नेपाली कवि मोतीलाल भट्ट, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और लक्ष्मी प्रसाद देवकोटा के साहित्य का उल्लेख करते हुए कहा कि इन साहित्यकारों ने दोनों देशों के बीच आत्मीयता को सुदृढ़ किया है। उन्होंने सीमावर्ती विद्यार्थियों और शोधार्थियों से भारत–नेपाल के विविध आयामों का तुलनात्मक अध्ययन करने का आह्वान किया तथा कहा कि हिंदी और नेपाली दोनों देवनागरी लिपि में होने के कारण एक–दूसरे को सीखना सरल है।

कार्यक्रम का स्वागत उद्बोधन प्रो. हरीशकुमार शर्मा ने प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि भारत–नेपाल के बीच केवल कूटनीतिक नहीं, बल्कि आत्मिक और सांस्कृतिक संबंध हैं। साहित्य इन संबंधों का संवाहक है और यह संगोष्ठी उसी जीवंत परंपरा का विस्तार है।

आभार–ज्ञापन कार्यक्रम संयोजक प्रो. सत्येंद्र दुबे ने किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. जयसिंह यादव तथा आख्या प्रस्तुतीकरण डॉ. रेनू त्रिपाठी ने किया।

दूसरे दिन पूर्वाह्न में तृतीय एवं चतुर्थ तकनीकी सत्रों का आयोजन हुआ। तृतीय तकनीकी सत्र की अध्यक्षता श्यामलाल महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ. सत्यप्रिय पांडेय ने की। उन्होंने दोनों देशों के रचनाकारों द्वारा किए गए साहित्यिक प्रयासों का उल्लेख करते हुए भारत–नेपाल संबंधों की मजबूती पर प्रकाश डाला। इसी सत्र में बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ के डॉ. बलजीत कुमार श्रीवास्तव ने दोनों देशों की लोककथाओं के माध्यम से सांस्कृतिक निकटता को व्याख्यायित किया।

चतुर्थ तकनीकी सत्र में जयप्रकाश नारायण विश्वविद्यालय, छपरा (बिहार) के प्रो. सिद्धार्थ शंकर त्रिपाठी ने गोरखनाथ से लेकर विविध साहित्यिक और सांस्कृतिक कड़ियों का उल्लेख करते हुए दोनों देशों की साझा विरासत पर प्रकाश डाला। इसी सत्र में दिग्विजय नाथ पी. जी. कॉलेज गोरखपुर के प्रो. नित्यानंद श्रीवास्तव तथा डॉ. गोपेश्वर दत्त पांडेय ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

संगोष्ठी के अंतर्गत आयोजित सांस्कृतिक संध्या विशेष आकर्षण का केंद्र रही। कार्यक्रम संयोजक प्रो. सत्येंद्र कुमार दुबे के निर्देशन

में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की कालजयी रचना "राम की शक्ति पूजा" का मंचन किया गया। यह प्रस्तुति अत्यंत प्रभावशाली एवं

बोधगम्य रही। विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं शोधार्थियों द्वारा प्रस्तुत इस नाटक में प्रो. सत्येंद्र कुमार दुबे, प्रो. हरीश कुमार शर्मा, डॉ. विशाल कुमार गुप्ता, डॉ. प्रज्ञेस नाथ त्रिपाठी, डॉ. यशवंत यादव, डॉ. वंदना गुप्ता, डॉ. रक्षा, डॉ. सरिता सिंह सहित अनेक शिक्षकों एवं शोधार्थियों ने मनमोहक अभिनय किया।

सांस्कृतिक संध्या को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो. कविता शाह ने कहा कि संगोष्ठियों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों की परंपरा रही है, किंतु इस प्रकार विषयानुकूल प्रस्तुति अनुकरणीय एवं अद्भुत है। "राम की शक्ति पूजा" का मंचन भारत–नेपाल संबंधों की सांस्कृतिक एकात्मता को जीवंत करता है। माता सीता का संबंध जनकपुर (नेपाल) से और भगवान राम का अयोध्या (भारत) से है। इस दृष्टि से यह मंचन संगोष्ठी के विषय की सार्थक अभिव्यक्ति और सांस्कृतिक अनुक्रमण की उत्कृष्ट मिसाल है। इस अवसर पर डॉ. विशाल कुमार गुप्ता, डॉ. हृदयकांत पांडेय, डॉ. रविकांत शुक्ला, डॉ. आभा द्विवेदी, डॉ. सरिता सिंह, डॉ. अमित साहनी, डॉ. हरेंद्र शर्मा सहित अनेक शिक्षक, शोधार्थी एवं प्रतिभागी उपस्थित रहे।

(लोककथा)

एक किसान था। उसकी पत्नी उसे जब–तब ससुराल जाने के लिए उकसाती रहती थी। उसको उससे शिकायत रहती थी कि वह कभी उसके मायके नहीं जाता। ससुराल में किसान की सास सौतेली थी और उसे वे दोनों (बेटी–दामाद) फूटी आँखों नहीं सुहाते थे। इसलिए वह जाना नहीं चाहता था। पत्नी द्वारा बार–बार प्रेरित किए जाने पर एक दिन वह ससुराल गया। ससुराल में उसकी सास ही घर पर मिली, जो उसे देखते ही मन–ही–मन जल–भुन गयी। उसे दामाद का अपने घर आना जरा भी अच्छा न लगा। इसलिए उसने उसे किसी तरह टालने के उद्देश्य से कहा– 'तुम बहुत गलत समय पर आये हो बेटा। इस समय घर में तुम्हें खिलाने के लिये भी कुछ नहीं है और घर पर कोई है भी नहीं, जो बाहर से कुछ ले आये।

किसान सास की चालाकी समझ गया, पर वह भी बहुत बड़ी चीज था। वह शीघ्र ही हार मान लेने वालों में से नहीं था। सो, उसने सास को ही सबक सिखाने का निश्चय किया। उसने लोहे को लोहे से ही काटा– "वह कोई बात नहीं है अम्मा जी! पर, इस समय मुझे बड़े जोर की प्यास लग रही है। पानी तो मिल जायेगा न ? अगर घर में ठण्डा पानी हो तो पिला दो।"

"हाँ–हाँ, क्यों नही ? पानी क्यों नहीं मिलेगा? तुम तब तक बैठो। में अभी कुएं से भरकर ताजा पानी लाती हूँ।" कहकर सास अपना तीर लक्ष्य पर समझ, मन–ही–मन खुश होती हुई रस्सी और कलश लेकर (पानी भरने) चली गयी।

कुआँ घर से दूर था। यह बात उसे मालूम थी। इसलिये जैसे ही सास घर से निकली, उसने घर की तलाशी लेनी शुरू कर दी। जब तक सास पानी लेकर घर वापस आये, किसान ने घर की पूरी तलाशी ले ली और अपने मतलब की हर चीज देख ली कि कहाँ पर क्या रखा है। उसने कुठिया में एक गागर में भरे रखे चावल और एक हँड़िया में रखी उड़द की दाल देख ली। बरोसी में दूध गरम हो रहा था, वह भी उसने देख लिया और अपनी योजना बना ली। एक सींके पर घीं से भरा हुआ मलसा रखा हुआ था। उसने फटाफट मलसा उतारा और बरोसी की तेज आँच में खौलते दूध की हँडिया को उतार कर उसके स्थान पर घी का मलसा रख दिया। जब तक सास लौटकर आयी तब तक उसने अपना काम कर लिया और घी को खोलाकर फिर से यथावत सींके पर टाँग दिया तथा बरोसी में दूध रख दिया। सास को इसकी भनक तक न लगी।

सास के वापस लौटने पर किसान ने पानी पीकर बात चलायी– "अम्मा क्या बतायें आज तो बच ही गये। तुम्हारी लल्ली का भाग्य है कि आज तुम्हारे दर्शन नसीब हो गये। रास्ते में जब हम आ रहे थे तो एक जगह बड़ा भयंकर साँप मिला। वह ऐसा काला था कि कुछ पूछो मत। बिल्कुल ऐसा कि जैसी कुठिया में मलसे में उड़द की काली दाल रखी है। और जब उसने मुँह खोला तो, अरे राम! ऐसे उसके सफेद–सफेद ऐसे नुकीले दाँत दिखे जैसे कुठिया में गागर में भरे चावल रखे हैं।" सास को कोई मौका दिये बिना ही वह एक साँस में यह सब कह गया। बात पूरी होते–होते सास तो समझ गयी कि अरे, इसने कुठिया में रखे चावल और दाल देख लिए हैं। लेकिन अब तो क्या ही हो सकता था। गलती हो गयी तो हो गयी। अब तो इसे कुछ बनाकर खिलाना ही पड़ेगा। सो बोली– "अरे बेटा! घर में चावल–दाल भी नहीं हैं सो बात नहीं है। मैं तो यह कह रही थी कि तुम मेरे सामने पहली बार यहाँ आये हो तो तुम्हें खिचड़ी खिलाते अच्छा थोड़े ही लगेगा। कुछ अच्छी व्यवस्था होनी चाहिए थी। तुम्हारे ससुर या साले कोई घर पर होते तो सब इन्तजाम होता। अब तो मुझे खिचड़ी ही बनानी पड़ेगी। वह तो मैं बनाऊँगी ही, तुम्हें कोई भूखा थोड़े ही सुलाऊँगी!" दामाद की जान में जान आयी। नही तो इतनी दूर से चलकर आया और रात को भूखा ही सोना पड़ता।

खैर, जैसे–तैसे उसने खिचड़ी बनायी और थाली में सूखी ही परोसकर खाने को दामाद के सम्मुख रख दी। दामाद ने सींके पर रखे घी के मलसे को देखा। सास समझ गयी कि यह घी चाह रहा है। पर वह भी पूरी घाघ थी। उसने अपना रोना शुरू किया– "ऊपर क्या देखते हो लल्ला। वह मलसा खाली रखा है। सींका खाली न रहे, इसलिये उस पर यह रख दिया है। अब तुम्हें क्या बतायें, भैस तो है घर में, पर वह अभी दूध नहीं दे रही।

दामाद नहीं माना, उसने कौर मुँह में ले जाने से पूर्व पुनः सींके की ओर देखा। सास ने कहा– 'लल्ला को विश्वास नहीं हो रहा है। मैं तुम्हें दिखाये देती हूँ।' कहकर उसने घी का मलसा सींके से उत्तारा और शीघ्रता से थाली में उलट दिया। उसे तो पता था कि जाड़े के मौसम में घी ऐसा मलसे में जम गया है कि थाली में कुछ आयेगा ही नहीं और अचानक से एकदम मलसा उलटकर सीधा कर देने से मलसे के अन्दर का घी दामाद को दिखाई भी नही देगा। पर, यहाँ तो दाँव उल्टा पड़ गया। एक साथ मलसा उलटते ही ढेर सारा घी निकलकर थाली में भर गया। सास हैरान रह गयी। समझ गयी कि पाला जबरदस्त से पड़ा है। प्रकटतः तो हँसते हुए उससे यही कहते बन पड़ा कि "अरे लल्ला, मैं तो मजाक कर रही थी। मैं देख रही थी कि तुम क्या कहोगे? मैं भला अपने दामाद को रूखी खिचड़ी थोड़े ही खिलाती।"

कहा तो उसने, पर उसके पेट में तो पानी हो गया था। उससे यह बर्दाश्त नहीं हो पा रहा था कि पूरा घी दामाद अकेला हजम कर जाये। सो उसने एक युक्ति निकाली। कहा– 'लल्ला, एक बात कहें यदि बुरा न मानो तो ? असल में हमारे यहाँ एक परम्परा है कि जब पहली बार सास और दामाद मिलते हैं तो दोनों संग–संग खाना खाते हैं। भले दो–चार कौर ही खायें।"

दामाद बोला– "अरे अम्मा की बातें! इसमें बुरा मानने की क्या बात? यह तो और अच्छी बात है। हमें कोई दिक्क्त नहीं। तुम खाओ हमारे साथ।"

सास खुश हो गयी। बैठ गयी सामने थाली में साथ खाने। लेकिन उसने देखा कि दामाद ने थाली तो ऐसे रखी हुई है कि सारा घी उसकी तरफ है। उसने फिर एक चाल चली। कुछ बात करनी शुरू की। पहले अपनी बेटी का हाल–चाल पूछा और फिर कहने लगी– "देखो लल्ला, हमने अपनी बेटी को बड़े नाजों से पाला है। आज तक यहाँ किसी ने उससे तू करके बात नहीं की है। अभी तक हालाँकि शिकायत तुम्हारे यहाँ से भी कोई नहीं आयी है। लेकिन एक बात जान लो। अगर कभी भी कोई ऐसी शिकायत तुम्हारे यहाँ से मिली तो तुम्हारा अलग रास्ता होगा और हमारी बेटी का ऐसे अलग रास्ता होगा।" यह कहकर उसने थाली में भरी खिचड़ी के बीच से उँगलियों से ऐसा रास्ता बनाया कि सारा घी उसकी ओर आने लगा।

दामाद ने मन में कहा, 'अच्छा तो यह बात है। खैर, मैं भी देखता हूँ इस बुढ़िया की होशियारी।' उसने उत्तर दिया– "अम्मा सही कह रही हो। अभी तक तो सब ठीक ही चल रहा है और उम्मीद है आगे भी सब ठीक ही रहेगा। मगर एक बात जान लो। तुम्हारा दामाद भी तुम्हारी बेटी को कम नहीं चाहता है। इसलिये यह समझ लो कि अगर यहाँ से वहाँ तक कभी कोई ऐसी नौबत आ ही गयी तो तो तुम तो कह रही हो रास्ता अलग करने की बात! मैं इतने से चुप थोड़े ही रह जाऊँगा। मैं तो जो ऐसा करेगा उसकी छाती पर चढ़कर ऐसे खून पी जाऊँगा।" यह कहते ही उसने थाली उठायी और अपने मुँह से लगाकर उसका सारा घी पी गया।

(प्रस्तुति– हरीशकुमार शर्मा)